IR
Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA

Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 02, February. 2026

भारत के पूर्वोत्तर में मीडिया की भूमिका : चुनौतियां एवं अवसर

डॉ अखंड प्रताप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग, स्वामी सुकदेवानंद कॉलेज शाहजहांपुर.

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र जिसे सात बहन एवं एक भाई राज्य के रूप में जाना जाता है अपनी सांस्कृतिक विविधता भौगोलिक महत्व और रणनीतिक स्थिति के कारण देश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। असम, अरुणाचल प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय, सिक्किम जैसे राज्य सीमा से सटे होने के कारण सुरक्षा और एकीकरण की चुनौतियों से जूझते हैं। मीडिया इस क्षेत्र को मुख्य धारा में जोड़ने का एक सशक्त माध्यम बन सकता है ।

Keywords: भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र, सामाजिक गठन, प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, आतंकवाद .

भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र समग्र सौंदर्य से परिपूर्ण भारत का न केवल अभिन्न अंग है बल्कि भारत की सुरक्षा और समृद्धि में उसकी भूमिका बहु आयामी है भारत के लिए एक जाना माना नाम 'सोने की चिड़िया' है तो इसी का पूर्वोत्तर भाग ऐसा नगीना है जो भौगोलिक और प्राकृतिक संपदा की दृष्टि से संपन्न और सांस्कृतिक दृष्टि से अनोखा है। किसी भी स्थान की संस्कृति की पहचान वहां की नस्लो प्रजातियों के सामाजिक गठन, धार्मिक विश्वास, रस्म रिवाज, भाषा, लोक विश्वास, साहित्य, और उनके आपसी संबंध और संपर्क पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से पूर्वोत्तर क्षेत्र भारतीय संस्कृतियों का संगम स्थल है। पूर्वोत्तर भारत का कुल क्षेत्रफल 2,62,500 वर्ग किलोमीटर है। इस क्षेत्र में असम, अरुणाचल प्रदेश मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, त्रिपुरा तथा सिक्किम यह आठ राज्य हैं । सिक्किम चारों तरफ से भूमिघिरा हुआ

भारत का एक ऐसा राज्य है जिसकी 98% सीमा अंतरराष्ट्रीय है। इन राज्यों में जो विशेषताएं हैं वह देश के अन्य भागों में नहीं मिलती । यह क्षेत्र जहां भौगोलिक दृष्टि से विभिन्नता और विचित्रता का क्षेत्र है वही सामरिक रूप से भी बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान में पूर्वोत्तर क्षेत्र में अनेक प्रथकतावादी शक्तियां मजबूत हुई हैं जो इस क्षेत्र में आतंकवाद- अलगाववाद ,उग्रवाद का वातावरण पैदा कर पूर्वोत्तर भारत को देश के मुख्य भूभाग से काटने का षड्यंत्र रचती रहती है। पूर्वोत्तर भारतीय क्षेत्र की विशिष्ट भौगोलिक संरचना है। पूर्वोत्तर भारत चार प्रमुख पड़ोसी देशों की सीमाओं से लगा हुआ है जिनमें चीन, म्यांमार, बांग्लादेश और भूटान आते हैं तथा पांचवें राष्ट्र नेपाल के सामीप्य को देखते हुए यह कहना गलत ना होगा कि 99% से अधिक इस क्षेत्र की सीमाएं अन्य पड़ोसी राष्ट्रों से लगती है। भारत के मुख्य भू-भाग से इसका संपर्क सिलीगुड़ी के संकीर्ण गलियारे से कुल 22 किलोमीटर से होकर गुजरता है जो चिकन- नेक के नाम से प्रसिद्ध है। साथ ही भारत के पूर्वोत्तर जैसे छोटे से क्षेत्र में जितनी जातीय, भाषाई, सामाजिक- सांस्कृतिक विविधता मौजूद है उतनी शायद दुनिया के किसी हिस्से में नहीं है। यह क्षेत्र अनेक बहुधार्मिक, बहुभाषीय समुदायों का घर है उनकी आस्थाओं में भी उतनी ही विविधता है जितनी उनकी भाषा और संस्कृति में।

प्रत्येक जातीय समूह की अपनी प्राथमिकताएं हैं उनके घोषित राजनीतिक लक्ष्य तथा उद्देश्य प्रायः परस्पर विशिष्ट होते हैं और उनके दृष्टिकोण में भिन्नता होती है। पूर्वोत्तर भारतीय क्षेत्र न केवल उन उग्रपंथी संगठनों का घर है जो अलग राष्ट्र की परिकल्पनाओं को लेकर संघर्षरत हैं बल्कि अनेक जातीय समुदायों का भी घर है जो तीव्र जातीय क्षेत्रीय संघर्षों में भी लिप्त

Received **02 February 2026**; Accepted **22 February 2026**. Available online: **28 February 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

रहते हैं । इस तरह पूर्वोत्तर आंतरिक और बाहरी दोनों तरह से संवेदनशील क्षेत्र है।

जन चेतना के निर्माण और विकास के लिए आज मीडिया से सशक्त माध्यम और कोई नहीं है भले वह प्रिंट मीडिया हो या अथवा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पूर्वोत्तर क्षेत्र की सही और सच्ची तस्वीर प्रस्तुत करके मीडिया इस दिशा में अपनी अहम भूमिका निभा सकता है। इसमें किंचित संदेह नहीं है विशेषकर ऐसा क्षेत्र जो वर्षों से हिंसा और आतंक के दौर से गुजर रहा हो उसके विषय में अत्यंत सावधानी पूर्ण लिखना और भी आवश्यक हो जाता है। इस संदर्भ में यह प्रश्न स्वाभाविक है क्या मीडिया अपने दायित्वों को समझकर अपने कर्तव्य का सही निर्वाह कर रहा है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के लोगों का कहना है कि भारत की राजधानी से प्रकाशित समाचार पत्र इस क्षेत्र के बारे में संकुचित मस्तिष्क और उदासीनता से काम लेते हैं। इस क्षेत्र की सच्ची तस्वीरें, समस्याओं के वास्तविक कारण व स्वरूप के स्थान पर हिंसा के समाचारों को अधिक महत्व देते हैं। बम धमाके, अपहरण, आतंकवादी गुटों द्वारा हत्या जैसी जगन्य कार्रवाई को तो तथाकथित राष्ट्रीय अखबारों या मीडिया जगत में जगह तो दे दी जाती है लेकिन यहां की तमाम खूबियों को नजरअंदाज कर दिया जाता है जिससे पूर्वोत्तर के बारे में शेष भारत में नकारात्मक संदेश जाता है और निश्चित ही इस तरह की समाचारों के आधार पर पूर्वोत्तर भारत की जो तस्वीर जनमानस में बनती है वह अत्यंत गिरावट वाली है जैसे पूर्वोत्तर भारत में हिंसा आतंक और खून खराबे को छोड़कर और कुछ भी नहीं है। इस क्षेत्र के सकारात्मक पहलुओं को किसी ने छूने की कभी कोशिश नही की और ना ही उन्हें प्रकाश में लाकर इसकी वास्तविक छवि प्रस्तुत की। कुछ समाचार पत्रों का विश्लेषण करके सत्य का उद्घाटन करने वाले असम के प्रमुख दैनिक असम ट्रिब्यून का मानना है कि पूर्वोत्तर भारत को अपने क्षेत्रीय एडिशनों को ही सौपकर और इससे पल्ला झाड़कर इन्होंने अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्षेत्रीय एडिशनों की पहुंच और उनका विस्तार कहां तक है स्पष्ट है कि क्षेत्रीय एडिशन जो कोलकाता या गुवाहाटी से प्रकाशित होते हैं वहीं तक अपनी पहुंच रख पाते हैं। पूर्वोत्तर भारत में बसे एक सामान्य नागरिक तक का यही मानना है कि सुदूर पूर्व या पूर्वोत्तर में बस होने के कारण वह उपेक्षित हैं। उनकी यह धारणा निर्मूल नहीं है दुखद परंतु यह सत्य है कि स्वतंत्र भारत में भी भौगोलिक अलगाव और दूरियों के कारण संपन्न और विविधतापूर्ण संस्कृति और सभ्यता के बारे में प्रचार के अभाव के कारण पूर्वोत्तर भारत को देश के मुख्य भाग में एक लंबे समय तक केवल असम के नाम से ही जाना रहा और वह भी सिर काटकर शिकार करने वाले जादू और तिलिस्म करने वालों के तथा मूल आदिवासियों से भरे आदम प्रदेश के रूप में। अज्ञान और जागरूकता के अभाव के कारण अपने ही देश के एक हिस्से के बारे में इस तरह की दृष्टिकोण ने पूर्वोत्तर और शेष भारत के लोगों के बीच मानसिक खाई पैदा कर दी। जबकि मीडिया इस दिशा में एक सार्थक भूमिका निभा सकता है था परंतु उसकी मजबूत उपस्तिथि का यहां पर अभाव रहा है।आज भी पूर्वोत्तर भारत में मुख्यत: क्षेत्रीय भाषा भारतीय भाषाओं के लगभग 600 से अधिक पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित और प्रसारित होती हैं। प्रत्येक राज्य में उनकी जनजाति और उनकी भाषा से संबंधित कई समाचार पत्र निकलते हैं जिनमें उनके हितों की अधिक बात होती हैं। इन क्षेत्रीय समाचार पत्रों का स्वरूप इतना क्षेत्रीय होता है कि इसमें राष्ट्रीय महत्व की चीजे दब जाती हैं और क्षेत्रीय भावनाओं का ही प्रकटीकरण होता है।अगर असम में ही देखे तो यहां छापने वाले असमिया, अंग्रेजी, हिंदी समाचार

Received **02 February 2026**; Accepted **22 February 2026**. Available online: **28 February 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

पत्रों के स्वरूप और दृष्टिकोण में भिन्नता देखी जा सकती है। असम के अखबार क्षेत्रीय भाषाओं क्षेत्रीय भावनाओं को ही महत्त्व देते हैं तो वही भारतीय हिंदी समाचारपत्रों में बाहर के राज्यों से यहां पर आए लोगों की भावनाओं को महत्व दिय़ा जाता हैं।

उग्रवादी संगठन उल्फा को कागजी शेर बनाने में असमी समाचार पत्रों और साप्ताहिक पत्रों की भूमिका को हम नकार नहीं सकते। प्रचार संख्या बढ़ाने के उद्देश्य से खबरों को प्रस्तुतीकरण आधिक जगह पर किया जाता है। हालांकि एच•डी•देश भरुआ जैसे अंग्रेजी के संपादको ने इन उग्रवादी संगठनों का खुलकर एक समय विरोध भी किया था। वही हिंदी समाचार पत्र में उग्रवाद को इस तरह दिखाया जाता है कि वह गैर असमियो में दहशत और डर का वातावरण पैदा करता है। वास्तव में मीडिया में यहां की आजादी का दुरुपयोग किया है। इस मुद्दे पर महात्मा गांधी का दृष्टिकोण कुछ अलग था वह अपनी आत्मकथा में लिखते हैं की "'समाचार पत्र की बड़ी ताकत है परंतु जैसे अनियंत्रित जलप्रवाह मैदानी भागों में जल मग्न कर फसलों को बर्बाद कर देता है उसी प्रकार अनियंत्रित कलम भी बर्बादी लाती है बाहर से थोपा गया नियंत्रण तो अनियंत्रण से भी अधिक खतरनाक हो जाता है यह तभी कारगर होता है जब खुद के अंदर से पैदा हो।" इसलिए मीडिया को आधारभूत सिद्धांतों में से दृष्टि नहीं हटनी चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि मीडिया अपनी आजादी को लक्ष्य के रूप में नहीं बल्कि अब बल्कि लक्ष्य तक पहुंचाने के माध्यम के रूप में स्वीकार करें। भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र आज जिस प्रकार से भीतरी आंतरिक और बाहरी समस्याओं से जूझ रहा है उसको सही दिशा में प्रस्तुत करके समाधान की दिशा में मीडिया चाहे तो जनमानस के समक्ष प्रश्न प्रस्तुत कर लोगो के मनोभावों को जागृत कर सकता है।

सरकार की उपेक्षित बंद आंखों को उस क्षेत्र के विकास के लिए खोल सकता है। नए-नए अवसर नए-नए विचारों को करने की जानकारी देना जागृति पैदा करना और भौगोलिक दूरियों को बांटने में विकास को अंतिम शर्तों तक पहुंचने में जितनी सशस्त्र भूमिका मीडिया निभा सकता है शायद और कोई नहीं निभा सकता । जब मीडिया की चर्चा होती है तो उसमें अनेक प्रकार उत्तर भारत में किस प्रकार इस क्षेत्र के विषय में और इसकी समस्याओं के विषय में जानकारी प्राप्त करना है यह थोड़ा विचारणीय प्रश्न है। इस क्षेत्र की समस्याओं के समाधान एवं विकास में प्रिंट के साथ-साथ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की बहुत बड़ी भूमिका है परंतु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में चटपटी खबरों को पड़ोसने की होड़ लगी है जबकि सांस्कृतिक एकता की स्थापना में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एक बहुत बड़ी भूमिका निभा सकता है यह एक राष्ट्रीय जिम्मेदारी है जिसे हमारा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आगे बढ़कर उठा सकता है और इस काम के लिए उन्हें किसी को दोष देने की जरूरत नहीं पड़ेगी परंतु दुर्भाग्यव प्रिंट की तुलना में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बौद्धिक जनता और अधिकचरेपन की बीमारी से ज्यादा ग्रसित रहा है। इसलिए मीडिया का सूचनाओं के सही अभिव्यक्तीकरण पर ध्यान देते हुए प्रस्तुत अपरिपक्वता,अनियंत्रित पूर्वाग्रह के प्रदर्शन पर रोक रकथाम अवश्य करना चाहिए।

दरअसल मीडिया की सोच है कि उसकी भूमिका केवल खबर देने तक ही सीमित है और वह समाधान का हिस्सा बनना नहीं चाहता। जब कारगिल संघर्ष पुलवामा अटैक या देश पर भी कभी-कभी जैसी घटना होती है तो प्रमुख मीडिया गानों में बड़े-बड़े विज्ञापन देकर घायल सैनिकों युद्ध विधवाओं और अनाथ की सहायता के लिए लोगों को लोगों से उदारता पूर्व दान करने की अपील की थी सारा देश एक होकर शहीदों की मदद के

Received **02 February 2026**; Accepted **22 February 2026**. Available online: **28 February 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

लिए उठ खड़ा हुआ था और शहीदों के लिए और खड़ा हुआ था परंतु पूर्वोत्तर के लोगों की शिकायत रहती है कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में कोई विपदा आती है जो अब तक की लड़ाई लड़ी गई सभी लड़ाईया में अधिक दिन तक भी हो तू बार-बार पीड़ितों के कल्याण दान करने के बारे में एक भी शब्द ना तो सुनाई पड़ता है और ना ही दिखाई पड़ता है यदि ऐसा कुछ हुआ तो कम से कम इस क्षेत्र और शेष भारत के बीच एक जड़ता का बढ़ावा मिलेगा आज लोकतांत्रिक समाज में मीडिया जनता के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है वास्तव में मीडिया की सोचता था और उसे प्राप्त सूचनाओं का लोकतांत्रिक समाज शक्ति प्राप्त करता है इतना ही नहीं मीडिया रूढ़िवादी परंपरागत अतिवादी लोकतंत्र और अधिनायक वादी समाजों के अंतर को भी जनता के सम्मुख प्रस्तुत करता है मीडिया जहां हमारी कमजोरी के मापदन तय करता है वहीं देश और समाज की शक्ति फलक को भी प्रस्तुत करता है

इस दृष्टि से मीडिया पूर्वोत्तर में काफी सुधार कर सकता है वास्तव में देश का सूचना तंत्र जितना मजबूत होगा जनता और सरकार के बीच संवेदनशीलता की संभावनाएं उतनी ही काम होंगे क्योंकि पूर्वोत्तर क्षेत्र में पहले से ही केंद्र सरकार की अपेक्षा की हमेशा ही बात कही जाती रही है सामाजिक अलगाव की यह भावना भी पहले ही बनी हुई है कि यह क्षेत्र राष्ट्र की तथाकृत मुख्य धारा से कटा हुआ है ऐसी स्थिति है कि सामाजिक एकीकरण को मीडिया आगे बढ़ा सकता है और वह इस यथार्थ को सामने ला सकता है कि दिल्ली से दूरी कोई समस्या नहीं है समस्या तो केवल सोच की है इसके लिए वह हमारी वित्तीय प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों का विवेक संबंध और न्याय संगत इस्तेमाल न होना भी बड़ी समस्या है मीडिया समाज का यह कर्तव्य है कि वह सच को सामने लाए और झूठी और मिथ्या धारणाओं तथा अर्धशक्ति को स्थाई रूप से देने से बच्चे उन्हें सामाजिक समस्याओं का समाधान खोजने के लिए अपनी शक्ति के साथ का कार्यों शक्ति के साथ कार्य करके सामाजिक संस्कृत समस्याओं का समाधान खोजने के लिए लगातार कठिन परिश्रम कर क्षेत्र में काम करने की आवश्यकता है इसके अलावा भ्रष्टाचार की बीमारी में भी आधुनिक समाज और सरकार को बुरी तरह से ग्रहण कर रखा है विकास की मार्ग में यह सबसे बड़ी बाधा है दस साहसी अधिकारियों और नेताओं को भ्रष्टाचार में लिप्त होने से रोकने में मीडिया का उत्तरदायित्व और भूमिका बहुत बड़ी है जिसे उसे आगे बढ़कर मजबूती से निभाना होगा मीडिया समाज उन विवाद ग्रस्त मुद्दों को सुलझाने में थोड़ा ध्यान और समय और देना होगा और कोशिश करनी होगी जिससे पूर्वोत्तर भारत एक लंबे समय से त्रस्त रहा है

आतंकवाद विकास के मार्ग में प्रमुख अवरोध है यहां पर जबरन वसूली के रूप में पनप रहे आपराधिक धंधे से इस क्षेत्र को होने वाली हानि के बारे में आम जनमानस को बताने में मीडिया की एक सशस्त्र और सकारात्मक भूमिका है इससे राज्य में पूंजी निवेश पर विपरीत प्रभाव पड़ता है जिसका असर विकास और प्रकृति पर होगा इसके लिए इस अतः एक संबंध पूर्वोत्तर का निर्माण में मीडिया एक मजबूत भूमिका निभा सकता है देश के तमाम जान भागों से की समन्वय और क्षेत्रीय और राष्ट्रीय जन चेतना में समग्र भागीदारी और क्षेत्रीय एकीकरण में मीडिया का एकत्र स्वरूप देश के जनमानस में परस्पर समन्वयकारी सोच को मजबूत कर सकता है। मीडिया इस क्षेत्र की संस्कृति, सभ्यता सामजिक विविधता और तमाम चीजों को लेकर देश के साथ एक समन्वय सेतु के रूप में काम कर सकता है।

Received **02 February 2026**; Accepted **22 February 2026**. Available online: **28 February 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License

Integral Research
(ISSN: 3048-5991) Coden: IRABCA
Research Article
(Peer-reviewed, Open Access & Indexed
Multidisciplinary Journal)
Journal home page: https://integralresearch.in/
Vol. 03, No. 02, February. 2026

संदर्भ:

(1) गुलशन राय मोगा: पूर्वोत्तर भारत - दर्शन और चिंतन आर्य प्रकाशन मंडल, नई दिल्ली, 2004, पृष्ठ 131

(2) चंद्रभूषण : पूर्वोत्तर भारत और अलगाववाद , समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ 179

(3) जगमोहन : मीडिया का आत्म- अनुशासन दैनिक जागरण बरेली

(4) बलबीर पुंज एक बेकाबू होड़ दैनिक जागरण बरेली

(5) शंभू नाथ सिंह: मीडिया की आजादी का मतलब, अमर उजाला, बरेली,

Received **02 February 2026**; Accepted **22 February 2026**. Available online: **28 February 2026**. Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension) This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License